

02 मई 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

अर्थव्यवस्था:

1. गर्म होते ग्रह पर श्रम का विश्लेषण:

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

**अर्थव्यवस्था:**

1. असमानता से लड़ने का गलत तरीका:

**पर्यावरण:**

1. एक पशु संरक्षण विधेयक जिसे जून में पेश किया जाना चाहिए:

**भूगोल:**

1. समुद्र स्तर में भी वृद्धि होती है:

**F. प्रीलिम्स तथ्य:**

1. इसरो को चंद्रमा के ध्रुवीय क्रेटर में बर्फ की प्रबल संभावना के प्रमाण मिले हैं:
2. क्वार्क नामक कण उन तारों के अंतिम परिणाम की व्याख्या करते हैं:
3. ओटावा में प्लास्टिक संधि वार्ता थोड़ी प्रगति के साथ संपन्न हुई:

**G. महत्वपूर्ण तथ्य:**

**आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।**

**H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**

I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

गर्म होते ग्रह पर श्रम का विश्लेषण:

अर्थव्यवस्था:

विषय: रोजगार (Employment)

मुख्य परीक्षा: श्रम उत्पादकता, मानव स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंध।

प्रसंग:

- श्रम विश्लेषण सम्बन्धी चर्चाओं में श्रम उत्पादकता, मानव स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंधों को नजरअंदाज कर दिया गया है, जिसमें आर्थिक और बुनियादी ढांचे के लचीलेपन पर अधिक जोर दिया गया है।
- हालाँकि, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (International Labour Organization (ILO)) की नवीनतम रिपोर्ट गर्म होते ग्रह द्वारा उत्पन्न उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए जलवायु-प्रूफिंग श्रम की तात्कालिकता को रेखांकित करती है।

समस्याएँ:

- ILO श्रम पर जलवायु परिवर्तन के छह प्राथमिक प्रभावों की पहचान करता है: जिसमे अत्यधिक गर्मी, सौर पराबैंगनी विकिरण, चरम मौसम की घटनाएं, कार्यस्थल वायु प्रदूषण, वेक्टर-जनित रोग और कृषि रसायनों के संपर्क में आना शामिल हैं।
- ये खतरे तनाव, स्ट्रोक और थकावट जैसे विभिन्न स्वास्थ्य मुद्दों में योगदान करते हैं, विशेष रूप से कृषि, निर्माण, परिवहन और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में श्रमिकों को प्रभावित करते हैं।

महत्व:

- जलवायु परिवर्तन के प्रति विभिन्न क्षेत्रों की संवेदनशीलता अलग-अलग है, वैश्विक स्तर पर कृषि सबसे अधिक संवेदनशील है, इसके बाद भारत का सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम ((MSMEs)) क्षेत्र और निर्माण उद्योग का स्थान आता है।
- इन क्षेत्रों में कई नौकरियों की अनौपचारिक प्रकृति श्रमिकों की गर्मी से संबंधित खतरों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ा देती है।

#### समाधान:

- हालाँकि भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यस्थल सुरक्षा को संबोधित करने वाले कानून मौजूद हैं, जैसे कि फैक्टरी अधिनियम, 1948, और भवन और अन्य निर्माण श्रमिक अधिनियम, 1996, बावजूद इनके प्रवर्तन और कवरेज जैसी चुनौतियां महत्वपूर्ण बनी हुई हैं।
- तकनीकी प्रगति और विकसित होती उत्पादन प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए मौजूदा नियमों को अद्यतन करने के लिए संशोधन आवश्यक हैं।
- इसके अलावा, खनन और विनिर्माण जैसे उद्योगों में अपशिष्ट निपटान और सिलिका जोखिम जैसे मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

#### सारांश:

- ILO रिपोर्ट जलवायु-रोधी कार्य और श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा के लिए एक सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नियामक ढांचे की स्थापना के महत्व पर जोर देती है। यह एक व्यापक दृष्टिकोण की मांग करता है जो गर्म होती ग्रह की स्थिति में लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए जलवायु संबंधी विचारों को श्रम नीतियों और प्रथाओं में एकीकृत करता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अपनाते हुए श्रमिकों की भलाई को प्राथमिकता देने के लिए सरकारों, उद्योगों और श्रमिक संगठनों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।

संपादकीय:

असमानता से लड़ने का गलत तरीका:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

अर्थव्यवस्था:

विषय: समावेशी विकास ( Inclusive growth)

मुख्य परीक्षा: भारत में आर्थिक असमानता के रुझान।

प्रसंग:

- भारत में आर्थिक असमानता की प्रवृत्ति पर फ्रांसीसी अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी के हालिया निष्कर्ष इस मुद्दे की गंभीरता को रेखांकित करते हैं।
- हालाँकि डेटा से असमानता के चिंताजनक स्तर का पता चलता है, जबकि कराधान के माध्यम से धन पुनर्वितरण का प्रस्तावित समाधान जांच की आवश्यकता है।

समस्याएँ:

- आय और धन असमानता: पिकेटी का शोध भारत में आय और धन वितरण में एक महत्वपूर्ण असमानता को उजागर करता है, जिसमें शीर्ष 1% के पास निचले 50% की तुलना में कुल संपत्ति और आय का अनुपातहीन हिस्सा है।
- प्रतिगामी कर प्रणाली: विश्लेषण में मुख्य रूप से आय पर आधारित भारत की कर प्रणाली की आलोचना करते हुए इसे प्रतिगामी बताया गया है, जिसमें अमीरों को लक्षित करके संपत्ति कर लगाने की मांग की गई है। हालाँकि, यह दृष्टिकोण आर्थिक गतिशीलता के महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज करता है और इसके अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं।

महत्व:

- आर्थिक विकास के रुझान: 1980 के दशक के बाद से आय और धन असमानता उल्लेखनीय रूप से बढ़ी हैं, जो भारत के बाजार-उन्मुख नीतियों की ओर बदलाव के साथ मेल खाती है। बढ़ते अंतर के

बावजूद, 1990 के दशक के बाद से समग्र आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है, जिससे आर्थिक हिस्सेदारी का विस्तार हुआ है।

- आर्थिक स्वतंत्रता असमानता: समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय के स्तर में भारी अंतर निचले 50% लोगों के लिए सीमित आर्थिक स्वतंत्रता को रेखांकित करता है। पूंजी तक पहुंच और शिक्षा की उच्च लागत जैसी बाधाएं बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की उनकी क्षमता में बाधा डालती हैं।

### समाधान:

- आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना: अमीरों पर अधिक कर लगाने के बजाय, वंचितों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का प्रस्ताव है। वित्त और शिक्षा जैसे क्षेत्रों को उदार बनाने से व्यक्तियों को उच्च-भुगतान वाले अवसरों का पीछा करने में सक्षम बनाया जा सकता है, जिससे आय अंतर को स्वाभाविक रूप से कम किया जा सकता है।
- विशेष विशेषाधिकारों को संबोधित करना: केंद्रित संपत्ति को अक्सर सरकार द्वारा समर्थित विशेषाधिकारों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जो समृद्ध लोगों को बाजार की प्रतिस्पर्धा से बचाते हैं। ऐसे लाभों को खत्म करने और प्रतिस्पर्धी माहौल को बढ़ावा देने से स्वाभाविक रूप से धन असमानताएं कम हो जाएंगी।

### सारांश:

- हालांकि कराधान के माध्यम से धन के पुनर्वितरण का विचार आकर्षक प्रतीत होता है, लेकिन इसकी प्रभावकारिता और परिणाम अधिक बारीकी से जांच के योग्य हैं। एक संपत्ति कर, असमानता को कम करने के बजाय, अनजाने में आर्थिक विकास को रोक सकता है और निम्न आय वाले समूहों के जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

एक पशु संरक्षण विधेयक जिसे जून में पेश किया जाना चाहिए:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

पर्यावरण:

विषय: पर्यावरण संरक्षण एवं जैव विविधता।

मुख्य परीक्षा: पशु संरक्षण विधेयक का महत्व।

प्रसंग:

- दुनिया भर के देश अपने पशु क्रूरता कानूनों में संशोधन कर रहे हैं, जिसका उदाहरण क्रोएशिया द्वारा हाल ही में सख्त दंड लागू करना है। भारत में, सामुदायिक कुत्ते (स्थानीय कुत्ते) की हत्या से जुड़ी एक दुखद घटना ने पशु क्रूरता के खिलाफ मजबूत कानूनी उपायों की मांग को जन्म दिया है।

समस्याएँ:

- मौजूदा कानूनों की अपर्याप्तताएँ: भारत में पशु क्रूरता को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक कानून, पशु क्रूरता निवारण (पीसीए) अधिनियम, 1960 की इसके खराब प्रवर्तन और न्यूनतम दंड के लिए आलोचना की जाती है।
- सज़ा में कमियाँ: पीसीए अधिनियम प्रभावी प्रतिशोध, निवारण और पुनर्वास के प्रावधानों की कमी के कारण सजा सिद्धांतों के अनुरूप होने में विफल रहता है। अपराध अक्सर जमानती होते हैं और उनमें मामूली जुर्माना लगाया जाता है, जिससे क्रूरता के खिलाफ थोड़ी रोकथाम होती है।

महत्व:

- सार्वजनिक आक्रोश और सुधार की मांग: जय की हत्या जैसी घटनाओं के बाद आक्रोश सार्वजनिक भावना को दर्शाता है और पशु क्रूरता को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए कानूनी सुधार की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- ड्राफ्ट पीसीए (संशोधन) विधेयक: प्रस्तावित संशोधन दंडों को बढ़ाकर, नए अपराध पेश करके और जानवरों के लिए मौलिक स्वतंत्रता को शामिल करके मौजूदा कानून की प्रमुख कमियों को दूर करना चाहते हैं।

समाधान:

- कानूनी ढाँचे को मजबूत करना: मसौदा पीसीए (संशोधन) विधेयक मौजूदा कानून को बदलने और पशु क्रूरता के अपराधियों के लिए अधिक कठोर दंड स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है।
- सजा और पुनर्वास को संतुलित करना: हालांकि सख्त दंड लगाना आवश्यक है, अपराधियों के बीच व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए पुनर्वास और सामुदायिक सेवा के प्रावधानों को भी कानूनी ढाँचे में एकीकृत किया जाना चाहिए।

**सारांश:**

- जून में आने वाली सरकार को भारत के पशु क्रूरता कानूनों को आधुनिक बनाने के लिए ड्राफ्ट पीसीए (संशोधन) विधेयक को लागू करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। वर्तमान कानून की अपर्याप्तताओं को संबोधित करके और अपराधों की गंभीरता के साथ दंडों को जोड़कर, भारत पशु कल्याण में एक प्रगतिशील उदाहरण स्थापित कर सकता है और अहिंसा के अपने सिद्धांतों को कायम रख सकता है।

समुद्र स्तर में भी वृद्धि होती है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

भूगोल:

विषय: भारतीय जलवायु और मौसम का पैटर्न।

मुख्य परीक्षा: हिंद महासागर के तापमान में वृद्धि के निहितार्थ।

प्रसंग:

- चूंकि भारत गर्मी की लहरों से जूझ रहा है, ऐसे में अच्छे मानसून की संभावना अस्थायी राहत प्रदान करती है। हालांकि, भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान के एक हालिया अध्ययन ने हिंद महासागर के तापमान वृद्धि में खतरनाक प्रवृत्तियों और इसके गहरे प्रभावों की चेतावनी दी है।

समस्याएँ:



- महासागरीय तापमान में वृद्धि: हिंद महासागर 1.2 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो गया है और 2020 से 2100 तक 1.7 डिग्री सेल्सियस से 3.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने का अनुमान है, जिससे समुद्री हीट वेन्स अधिक लगातार और तीव्र होंगी।
- चक्रवात (cyclones) और मानसून पर प्रभाव: समुद्र का बढ़ा हुआ तापमान चक्रवातों में वृद्धि और अनियमित मानसून पैटर्न से जुड़ा है, जिससे सूखा, बाढ़ और भारत के समुद्र तट पर चक्रवाती गतिविधि बढ़ रही है।

#### महत्व:

- समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और मत्स्य पालन: समुद्री हीट वेन्स बढ़ने से समुद्री जैव विविधता, प्रवाल भित्तियों और मत्स्य पालन को खतरा है, जिससे तटीय समुदायों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो रही है।
- भारत की मुख्यभूमि भेद्यता: इसके परिणाम मुख्य भूमि भारत तक फैले हुए हैं, चक्रवात की आवृत्ति में वृद्धि और अप्रत्याशित मानसून के कारण कृषि, बुनियादी ढाँचा और सार्वजनिक सुरक्षा प्रभावित हो रही है।

#### समाधान:

- सहयोगात्मक डेटा संग्रहण: भारत को डेटा संग्रह और निगरानी प्रयासों को बढ़ाने, सटीक अनुमान और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाने के लिए हिंद महासागर के देशों के साथ सहयोग करना चाहिए।
- बुनियादी ढाँचा और अनुकूलन: बढ़ते समुद्र स्तर, चरम मौसम की घटनाओं और समुद्री परिवर्तनों के प्रभाव को कम करने के लिए बुनियादी ढांचे और अनुकूलन रणनीतियों में निवेश महत्वपूर्ण है।

#### सारांश:

- गर्म होते हिंद महासागर से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और

सक्रिय उपायों की आवश्यकता है। डेटा-साझाकरण पहल को मजबूत करके और अनुकूली रणनीतियों को लागू करके, भारत अपने तटीय क्षेत्रों और उससे आगे जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के लिए बेहतर तैयारी कर सकता है।

### प्रीलिम्स तथ्य:

#### 1. इसरो को चंद्रमा के ध्रुवीय क्रेटर में बर्फ की प्रबल संभावना के प्रमाण मिले हैं:

### प्रसंग:

- भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में इसरो के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) आईआईटी कानपुर, यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया, जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी और आईआईटी (आईएसएम) धनबाद सहित विभिन्न संस्थानों के सहयोग से किए गए एक अध्ययन ने चंद्रमा के ध्रुवीय क्रेटर में जल बर्फ की घटना की संभावना के प्रबल प्रमाण प्रदान किए हैं।

### समस्याएँ:

- अध्ययन से पता चलता है कि चंद्रमा की सतह के पहले कुछ मीटर के भीतर बर्फ की उप-सतह मात्रा काफी अधिक है, जो सतह पर मौजूद बर्फ से लगभग पांच से आठ गुना बड़ी होने का अनुमान है।
- इसके अलावा, जांच से पता चलता है कि चंद्रमा के उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में जल बर्फ की मात्रा दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में पाई जाने वाली बर्फ से लगभग दोगुनी है।

### महत्व:

- इस अध्ययन के निष्कर्षों का भविष्य के चंद्र अन्वेषण मिशनों और चंद्रमा पर दीर्घकालिक मानव उपस्थिति की स्थापना पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- चंद्र ध्रुवीय क्रेटरों में जल बर्फ के वितरण और गहराई को समझना भविष्य के मिशनों के लिए संभावित लैंडिंग और नमूना स्थलों की पहचान करने के लिए आवश्यक है, जिसका उद्देश्य चंद्र वाष्पशील पदार्थों की खोज और लक्षणों का वर्णन करना है।

**समाधान:**

- अध्ययन इस परिकल्पना की पुष्टि करता है कि चंद्र ध्रुवों में उप-सतह जल बर्फ का प्राथमिक स्रोत इम्ब्रियन काल में ज्वालामुखी के दौरान गैस बन कर बाहर निकल रहा है।
- इसके अतिरिक्त, जल बर्फ का वितरण मरे ज्वालामुखी (mare volcanism) और तरजीही प्रभाव क्रेटरिंग से प्रभावित होता प्रतीत होता है।
- भविष्य में, जल बर्फ की घटना के वितरण और गहराई का सटीक ज्ञान चंद्रमा पर इसरो की भविष्य की अस्थिर अन्वेषण योजनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए यह महत्वपूर्ण होगा।

**2. क्वार्क नामक कण उन तारों के अंतिम परिणाम की व्याख्या करते हैं:****प्रसंग:**

- क्वार्क (quarks) के रूप में जाने जाने वाले कण कुछ सितारों, विशेष रूप से न्यूट्रॉन सितारों के अंतिम परिणाम को समझने की व्याख्या करते हैं, जो तारकीय विस्फोटों के घने अवशेष हैं।
- क्वार्कों और विषम परिस्थितियों में उनके व्यवहार का अध्ययन परमाणु भौतिकी और खगोल भौतिकी के मूलभूत पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

**समस्याएँ:**

- क्वार्क, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के निर्माण खंड, हैड्रोन नामक समूहों में मौजूद होते हैं, जैसे प्रोटॉन और न्यूट्रॉन।
- हाल के अध्ययनों ने क्वार्कों के व्यवहार में अंतर्दृष्टि प्रदान की है, जिसमें विशिष्ट परिस्थितियों में दो-क्वार्क समूहों पर तीन-क्वार्क समूहों का निर्माण भी शामिल है।
- इसके अतिरिक्त, पूरी तरह से भारी क्वार्क से बने गुच्छों के अवलोकन किए गए हैं, जो पारंपरिक कण-भौतिकी मॉडल को चुनौती देते हैं।

**महत्व:**

- परमाणु संलयन ( [nuclear fusion](#)) और तारों के अंतिम परिणाम की व्याख्या जैसी घटनाओं को समझने के लिए क्वार्क को समझना महत्वपूर्ण है।
- न्यूट्रॉन सितारों में, अत्यधिक दबाव न्यूट्रॉन को पदार्थ की सघन अवस्था में ले जाता है, जो संभवतः क्वार्क से बना होता है।
- न्यूट्रॉन सितारों के भीतर क्वार्क पदार्थ की उपस्थिति उनकी संरचना और व्यवहार पर प्रभाव डालती है, जिससे तारकीय विकास और क्वार्क सितारों जैसी विदेशी खगोलीय वस्तुओं के निर्माण की हमारी समझ प्रभावित होती है।

**समाधान:**

- न्यूट्रॉन सितारों के भीतर क्वार्क पदार्थ की उपस्थिति का पता लगाने के लिए शोधकर्ताओं ने सैद्धांतिक गणनाओं के साथ खगोलभौतिकीय अवलोकनों को जोड़ा है।
- विशाल न्यूट्रॉन सितारों में क्वार्क पदार्थ की संभावना की भविष्यवाणी करने वाले मॉडल विकसित करने के लिए सुपरकंप्यूटिंग सिमुलेशन को नियोजित किया गया है।
- हालाँकि, इन मॉडलों को मान्य करने और चरम परिस्थितियों में क्वार्क व्यवहार के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने के लिए और अधिक अवलोकन संबंधी डेटा की आवश्यकता है।

**3. ओटावा में प्लास्टिक संधि वार्ता थोड़ी प्रगति के साथ संपन्न हुई:****प्रसंग:**

- ओटावा में वैश्विक प्लास्टिक संधि वार्ता का उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण के गंभीर मुद्दे को संबोधित करना था, लेकिन इसमें सीमित प्रगति के साथ यह वार्ता संपन्न हुई।

- प्लास्टिक प्रदूषण को खत्म करने के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते का मसौदा तैयार करने के प्रयासों के बावजूद, प्लास्टिक और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के बीच गहरे संबंध के कारण चुनौतियां बनी हुई हैं।

### समस्याएँ:

- इस वार्ता को महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ा, जिसमें तेल अर्थव्यवस्थाओं की प्लास्टिक पर आर्थिक निर्भरता, प्लास्टिक से जुड़े व्यापक विनिर्माण उद्योग और किफायती विकल्पों की कमी शामिल थी।
- प्लास्टिक, जो अपनी गैर-बायोडिग्रेडेबिलिटी के लिए कुख्यात है, समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों को प्रदूषित करके गंभीर पर्यावरणीय खतरे पैदा करता है।

### महत्व:

- अस्थिर प्लास्टिक उत्पादन को संबोधित करने में विफलता प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने की दिशा में प्रगति में बाधा डालती है।
- हालाँकि वार्ता में प्राथमिक प्लास्टिक उत्पादन को रोकने के लिए कोई समयसीमा तय नहीं की गई, लेकिन देश उत्सर्जन, उत्पाद डिजाइन, अपशिष्ट प्रबंधन और वित्तपोषण सहित विभिन्न पहलुओं के विस्तृत आकलन पर सहमत हुए हैं।

### समाधान:

- आधिकारिक वार्ता सत्रों के बीच महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा को सुविधाजनक बनाने के लिए अंतर-सत्रीय विशेषज्ञ बैठकें निर्धारित की जाती हैं।
- नवंबर 2024 में बुसान, दक्षिण कोरिया में होने वाली आगामी बैठक संधि को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण होने की उम्मीद है।

- हालाँकि, चुनौतियां बनी हुई हैं, विशेष रूप से भारत जैसे कुछ देशों से प्राथमिक प्लास्टिक उत्पादन पर प्रतिबंधों के विरोध के बारे में।

### महत्वपूर्ण तथ्य:

**आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।**

### UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

**प्रश्न 1. चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में उत्तरी ध्रुव क्षेत्र की तुलना में आश्रयित क्रेटर अधिक तादाद में हैं।
2. जल बर्फ की उप-सतह का प्राथमिक स्रोत ज्वालामुखी के दौरान निकलने वाली गैस है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**उत्तर: c**

**व्याख्या:**

- सभी कथन सही हैं।

**प्रश्न 2. क्वार्क के संबंध में कौन सा/से कथन सही है/हैं?**

1. क्वार्क प्राथमिक कण हैं जो छह विशेष गुण लिए होते हैं: ऊपर, नीचे, शीर्ष, तल, असामान्य एवं आकर्षण।
2. वे आम तौर पर दो और तीन के समूह में एक साथ जुड़कर हैड्रोन बनाते हैं जैसे कि प्रोटॉन और न्यूट्रॉन जो परमाणु नाभिक बनाते हैं।

निम्नलिखित कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल 1

- (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों  
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: c

व्याख्या:

- दोनों कथन सही हैं।

**प्रश्न 3. वन्यजीव संरक्षण के बारे में भारतीय कानूनों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. जंगली जानवर सरकार की एकल संपत्ति हैं।
2. जब किसी जंगली जानवर को संरक्षित घोषित किया जाता है, तो ऐसा जानवर समान सुरक्षा का हकदार होता है, चाहे वह संरक्षित क्षेत्रों में पाया जाए या बाहर।
3. एक संरक्षित जंगली जानवर के मानव जीवन के लिए खतरा बनने की आशंका उसे पकड़ने या मारने के लिए पर्याप्त आधार है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) केवल एक  
(b) केवल दो  
(c) सभी तीन  
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: b

व्याख्या:

- केवल अगर जंगली जानवर मानव जीवन के लिए खतरा बन जाता है या बीमार हो जाता है या ठीक होने से परे विकलांग हो जाता है, तो उसे सक्षम प्राधिकारी यानी राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन द्वारा पकड़ने या मारने की अनुमति दी जा सकती है।

**प्रश्न 4. हिंद महासागर के बढ़ते ताप के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं:**

1. हिंद महासागर में, अकेले तापीय विस्तार समुद्र-स्तर की वृद्धि के आधे से अधिक के लिए जिम्मेदार है।



2. अनुमानों से पता चलता है कि अत्यधिक द्विध्रुवीय घटनाओं में 66% की वृद्धि हुई है जिससे भारतीय मानसून में कमी आ सकती है।

निम्नलिखित कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

**उत्तर: c**

**व्याख्या:**

- दोनों कथन सही हैं।

**प्रश्न 5. क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

- 1. इस अधिनियम का विधायी इरादा "जानवरों को अनावश्यक दर्द या पीड़ा पहुंचाने से रोकना" है।
- 2. भारतीय पशु कल्याण बोर्ड की स्थापना 1962 में अधिनियम की धारा 4 के तहत की गई थी।
- 3. अधिनियम 3 महीने की सीमा अवधि का प्रावधान करता है जिसके बाद इस अधिनियम के तहत अपराधों के लिए कोई मुकदमा नहीं चलाया जाएगा।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**उत्तर: c**

**व्याख्या:**

- सभी कथन सही हैं।

**UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:**



**प्रश्न 1. थॉमस पिकेटी के हालिया निष्कर्षों के अनुसार, भारत में आर्थिक असमानता अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गई है, यहां तक कि ब्रिटिश औपनिवेशिक काल से भी आगे निकल गई है। 1980 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से बढ़ती आर्थिक असमानता के कारणों का मूल्यांकन कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द) [जीएस-3, अर्थव्यवस्था]** (According to recent findings by Thomas Piketty, economic inequality in India has reached unprecedented levels, surpassing even those during the British colonial period. Evaluate the causes of rising economic inequality since the liberalization of the Indian economy in the 1980s. (15 marks, 250 words) [GS-3, Economy])

**प्रश्न 2. जलवायु परिवर्तन तेजी से व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, जिससे श्रम नियमों और प्रथाओं में समायोजन की आवश्यकता हो रही है। कार्यबल पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर चर्चा कीजिए। साथ ही, इन चुनौतियों से निपटने में भारत के मौजूदा कानूनी ढांचे की पर्याप्तता का मूल्यांकन करें और सुधार के उपाय सुझाएं। (15 अंक, 250 शब्द) [जीएस-3, पर्यावरण]** (Climate change is increasingly affecting occupational safety and health, necessitating adjustments in labour regulations and practices. Discuss the impacts of climate change on the workforce. Also, evaluate the adequacy of India's existing legal frameworks in addressing these challenges and suggest measures for improvement. (15 marks, 250 words) [GS-3, Environment])

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)